

ॐ जय जय मात-पिता



.....• दीप प्रज्वलन श्लोक •.....

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

(आरती की तर्ज - ॐ जय जगदीश हरे:)

ॐ जय जय मात-पिता, प्रभु गुरुजी मात-पिता ।
सद्ब्राव देख तुम्हारा - २, मस्तक झुक जाता ॥
ॐ जय जय...

कितने कष्ट उठाये हमको जनम दिया, मङ्ग्या पाला - बड़ा किया ।
सुख देती, दुःख सहती - २, पालनहारी माँ ॥
ॐ जय जय...

अनुशासित कर आपने उन्नत हमें किया, पिता आपने जो है दिया ।
कैसे ऋण मैं चुकाऊँ - २, कुछ न समझ आता ॥
ॐ जय जय...

सर्व तीर्थमयी माता सर्व देवमय पिता, ॐ सर्व देवमय पिता ।
जो कोई इनको पूजे - २, पूजित हो जाता ॥
ॐ जय जय...

मात-पिता की पूजा गणेशजी ने की, श्रीगणेशजी ने की ।
सर्वप्रथम गणपति को - २, ही पूजा जाता ॥
ॐ जय जय...

बलिहारी सद्गुरु की मारग दिखा दिया, सच्चा मारग दिखा दिया ।
मातृ-पितृ पूजन कर - २, जग जय जय गाता ॥
ॐ जय जय...

मात-पिता प्रभु गुरु की आरती जो गाता, है प्रेम सहित गाता ।
वो संयमी हो जाता, सदाचारी हो जाता, भव से तर जाता ॥
ॐ जय जय...

लफंगे-लफंगियों की नकल छोड, गुरु सा संयमी होता ।
गणेशजी सा संयमी होता ।
स्वयं आत्मसुख पाता - २, औरों को पवाता ॥
ॐ जय जय मात-पिता...

